साखियाँ एवं सबद

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» वैष्णव जन: सच्चे भक्त का आचरण

प्रश्न 1 (आसान). भजन में "निंदा न करे" का मतलब क्या है?

उत्तर – किसी की बुराई/कटाक्ष करके निंदा नहीं करना।

प्रश्न 2 (आसान). "वाच काछ मन-निश्छल" से क्या समझाते हैं?

उत्तर – बात भी साफ और मन भी निष्कपट रखना।

प्रश्न 3 (मध्यम). समदृष्टि और तृष्णा-त्याग–एक-एक उदाहरण लिखो।

उत्तर – समदृष्टि: जीत-हार में सबके साथ एक जैसा सम्मान; तृष्णा-त्याग: जरूरत से ज़्यादा की लालच में दूसरों का नुकसान न करना।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर किसी दोस्त की गलती हो जाए, तो वैष्णव जन की प्रतिक्रिया भजन के अनुसार कैसी होगी? (कम से कम 3 गुण जोड़ो)

उत्तर – निंदा नहीं करेगा, परदुःख समझकर मदद करेगा, वाणी निष्कपट रखेगा, असत्य नहीं बोलेगा और अभिमान नहीं लाएगा।

» कबीर परिचय: जीवन, परंपरा और रचनाओं का संकलन

प्रश्न 5 (आसान). भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा में कबीर को किस तरह माना जाता है?

उत्तर – प्रमुख कवि

प्रश्न 6 (आसान). कबीर के ज्ञान-विकास के प्रमुख स्रोत कौन-कौन से बताए जाते हैं?

उत्तर – सत्संग, पर्यटन/पर्याटन और अनुभव

प्रश्न 7 (मध्यम). कबीर की रचनाओं का मुख्य संकलन किसे माना गया है?

उत्तर – कबीर ग्रंथावली

प्रश्न 8 (मध्यम). कबीर पंथ में कबीर की रचनाओं के संग्रह को प्रामाणिक किसे माना जाता है?

उत्तर – बीजक

प्रश्न 9 (कठिन). कबीर की कुछ रचनाएँ किस ग्रंथ में भी संकलित मिलती हैं, और यह क्या संकेत देता है?

उत्तर – गुरु ग्रंथ साहब में भी; यह बताता है कि कबीर की आवाज़ विभिन्न संत-परंपराओं तक पहुँची।

» कबीर के केंद्रीय मूल्य: पाखंड का विरोध और भेदभाव-मुक्त मन

प्रश्न 10 (आसान). कबीर किस तरह के पाखंड का विरोध करते हैं–सिर्फ 'भक्ति' का या 'दिखावे/चाल' का?

उत्तर – दिखावे/चाल और नाम की आड़ में चलने वाले पाखंड का।

प्रश्न 11 (आसान). कबीर के अनुसार ईश्वर बाहर किसी एक जगह का 'हक' नहीं होता–यह बात कौन-सी पंक्ति से समझ आती है?

उत्तर – "ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे वैफलास में।"

प्रश्न 12 (मध्यम). "सब स्वाँसों की स्वाँस में" का अर्थ लिखिए और बताइए इससे भेदभाव कैसे टूटता है।
उत्तर – ईश्वर इंसान की सबसे भीतरी सांस/अहसास के भीतर है। इसलिए किसी धर्म/समुदाय की दीवार बनाकर ईश्वर की 'निकटता' का दावा करना गलत हो जाता है, भेदभाव टूटता है।

प्रश्न 13 (कठिन). "हिंदू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ" के बाद कबीर की दूसरी पंक्ति "कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ वेफ निकटि न जाइ" का सामाजिक-संदेश बताइए।
उत्तर – कबीर कहते हैं कि सिर्फ 'हम हिंदू' और 'तुम मुसलमान' वाली खींचतान में जीना असली जीवन नहीं है। जो दोनों के संकीर्ण दावे/दूरियाँ बनाने वाली सोच के पास नहीं जाता, वही वास्तविकता के करीब है–यानी भेदभाव से मुक्त मनुष्य।

» काव्य का उद्देश्य: प्रेम, ज्ञान, वैराग्य और आत्मबोध

प्रश्न 14 (आसान). कबीर के काव्य में "आत्मबोध" का मतलब क्या है?
उत्तर – अपने भीतर झाँककर सच्चाई को पहचानना।

प्रश्न 15 (आसान). गुरुभक्ति और सत्संग कबीर की कविता में किस उद्देश्य को सहारा देते हैं?
उत्तर – प्रेम, ज्ञान और वैराग्य के असर को अंदर तक पहुँचाने को।

प्रश्न 16 (मध्यम). जब कविता बताती है कि कर्मकांड/दिखावे से कुछ नहीं बदलता, तो उसमें मुख्य रूप से कौन सा भाव सक्रिय है–प्रेम/ज्ञान/वैराग्य/आत्मबोध?
उत्तर – वैराग्य और साथ में ज्ञान। (मोह/दिखावे को छोड़ने की समझ आती है और विवेक बढ़ता है)

प्रश्न 17 (कठिन). कबीर के 'आत्मबोध' से 'जगतबोध' कैसे बनता है? एक कारण लिखो।
उत्तर – जब व्यक्ति अपने भीतर की सच्चाई पहचानता है (आत्मबोध), तब दुनिया को देखने का नजरिया बदलता है–वह कर्मकांड/भेदभाव/दिखावे के आधार पर निर्णय नहीं करता, इसलिए जगतबोध बनता है।

» साखियाँ: प्रेम/संत-लक्षण/ज्ञान-महिमा का संदेश

प्रश्न 18 (आसान). कबीर के अनुसार "निरपख होइ… हरि भजै" तो संत कौन है?
उत्तर – वही संत है जो पक्ष/दिखावे से मुक्त होकर हरि का भजन करे–"सोई संत सुजान।"

प्रश्न 19 (आसान). साखी "सब विष अमृत होइ" में संदेश क्या है?
उत्तर – सच्चे प्रेम से विष/दुख भी अमृत जैसा लगने लगता है–दृष्टि बदल जाती है।

प्रश्न 20 (मध्यम). "हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि" में ज्ञान को कैसे समझाया गया है? और 'डारि' से क्या संकेत मिलता है?
उत्तर – ज्ञान को 'हस्ती' (शक्ति/सवारी) के रूपक से दिखाया है। 'डारि' संकेत देता है कि सहज/ठहराव के बहाने जो गलत आदत है, उसे छोड़कर ज्ञान से आगे बढ़ना चाहिए।

प्रश्न 21 (कठिन). "कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ वेफ निकटि न जाइ" का अर्थ 'विवेक' से जोड़कर समझाइए।
उत्तर – इसका अर्थ है–जो व्यक्ति दो छोरों/अंधविश्वास या दो तरह के मोह में फँसकर नहीं रहता, वही सच में समझदारी से 'जीवता' है। ज्ञान-विवेक उसे सही रास्ते पर टिकाता है।

» सबद/पद: बाह्य-खोज का खंडन और 'आंतरिक ईश्वर'

प्रश्न 22 (आसान). कबीर कहते हैं, ईश्वर किसमें सीमित नहीं है–(देवल-मसजिद-काबा वाला संकेत याद करो)?
उत्तर – ईश्वर देवल, मसजिद या काबा में सीमित नहीं है।

प्रश्न 23 (आसान). "खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं" का भाव क्या है?
उत्तर – सच्ची खोज/तल्लीनता से जल्दी अनुभव हो सकता है।

प्रश्न 24 (मध्यम). “सब स्वाँसों की स्वाँस में” का अर्थ अपने शब्दों में लिखो।
उत्तर – ईश्वर हर सांस के भीतर, जीवन-शक्ति/चेतना के सबसे अंतर में मौजूद अनुभव होता है।

प्रश्न 25 (कठिन). कबीर बाहरी खोज का खंडन क्यों करते हैं? एक कारण लिखो और एक उदाहरण भी दो।
उत्तर – क्योंकि बाहर की जगह/क्रिया पर टिके रहने से मन की भीतर की सच्चाई-जागृति नहीं होती। उदाहरण: मंदिर जा कर भी मन में अहं/भटकाव रहे तो शांति और ‘मिलन’ का अनुभव नहीं होता।

» ज्ञान की आँधी: रूपक द्वारा भ्रम-माया और मोह का टूटना

प्रश्न 26 (आसान). कबीर ‘ज्ञान की आँधी’ से किस चीज़ को उड़ाने/तोड़ने की बात करते हैं?
उत्तर – भ्रम की टाटी, माया की बांधने वाली पकड़, और मोह की गाढ़ी जड़ें।

प्रश्न 27 (आसान). ‘माया रहै न बाँधी’ का भाव क्या है?
उत्तर – माया अब बांधकर रोकने वाली शक्ति नहीं रहती; उसकी पकड़ ढीली हो जाती है।

प्रश्न 28 (मध्यम). दोहे ‘हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी’ में ‘द्वै’ और ‘थूँनी’ का संकेत किस तरफ है?
उत्तर – भीतर की दुविधा/दोहरी सोच की ठूँसी हुई जड़ को गिराने की तरफ, यानी मन की जंजीर तोड़ने की तरफ।

प्रश्न 29 (कठिन). कबीर के अनुसार ‘हरि की गति जब जाँणी’ के बाद साधक में क्या बदलाव दिखता है, और यह ‘प्रेम हरि जन भींनाँ’ से कैसे जुड़ता है?
उत्तर – हरि की वास्तविक गति समझने पर कपट/ढोंग वाली काया बाहर निकलती घटती है; भीतर की सच्चाई जागती है। उसी टूटे भ्रम-मोह के बाद प्रेम का भीगा देने वाला ‘उदित’ भाव प्रकट होता है–इसलिए ज्ञान से प्रेम का संबंध बनता है।

» रचना और अभिव्यक्ति: कबीर के विचारों का पाठ-आधारित विश्लेषण

प्रश्न 30 (आसान). कबीर के सद्भाव वाले विचार में “ज्ञान” की भूमिका क्या बनती है?
उत्तर – ज्ञान से भ्रम-मोह टूटते हैं और कपट घटता है, जिससे विभाजन वाली सोच कमजोर पड़ती है।

प्रश्न 31 (आसान). पाठ-आधारित विश्लेषण में हमें क्या जोड़ना चाहिए?
उत्तर – हर मुख्य विचार के साथ साखी/पद की पंक्ति या भाव का स्पष्ट समर्थन।

प्रश्न 32 (मध्यम). पंक्ति “आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।” का विश्लेषण कैसे करोगे?
उत्तर – समझोगे कि आँधी के बाद प्रेम का ‘भींनापन’ जागता है–इससे भक्त का जीवन प्रेममय होता है, जो सद्भाव को बढ़ाता है।

प्रश्न 33 (कठिन). कबीर के अनुसार संकीर्णताओं के कम होने का आधार क्या है? अपने उत्तर में पाठ-समर्थन दें।
उत्तर – आधार भीतर का ज्ञान-परिवर्तन है। ज्ञान से भ्रम-मोह और कपट घटते हैं; इसलिए विभाजन/संकीर्णता की जड़ कमजोर पड़ती है। समर्थन: “आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।” और सहजता पर जोर: “हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।”

» भाषा-अध्ययन: तत्सम रूपों का लेखन

प्रश्न 34 (आसान). ‘अनत’ का तत्सम रूप क्या होगा?
उत्तर – अनन्त

प्रश्न 35 (आसान). ‘जोग’ का तत्सम रूप लिखिए।
उत्तर – योग

प्रश्न 36 (मध्यम). ‘बैराग’ का तत्सम रूप लिखिए।
उत्तर – वैराग्य

प्रश्न 37 (मध्यम). 'निरपख' का तत्सम रूप लिखिए।

उत्तर – निरपेक्ष

प्रश्न 38 (कठिन). 'जुगति' का तत्सम रूप क्या है? और यह किस भाव/अर्थ से जुड़ा है?

उत्तर – युक्ति; मतलब उपाय/रास्ता (सही उपाय)

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. भजन की पंक्ति "मन अभिमाण न आणे रे" के अनुसार एक छात्र का आचरण कैसा होना चाहिए? उदाहरण देकर समझाओ।

› पहले अर्थ समझो: अभिमान न लाना = खुद को बड़ा मानने का भाव न रखना।
› अब स्थिति बनाओ: मान लो तुम्हारा जवाब सही निकला और शिक्षक ने तारीफ की।
› आचरण तय करो: तारीफ से खुश हो सकते हो, लेकिन सामने वाले को तिरस्कार/हँसी नहीं करनी।
› बोलने में भी शुद्धि रखो: "देखो मैंने बताया था" जैसे ताने नहीं, "तुम भी सीख लो" जैसी मदद करो।

उत्तर – "मन अभिमाण न आणे रे" का मतलब है कि सफल होने पर भी तुम अहंकार में नहीं जाओ। तारीफ मिलते ही दूसरों को नीचा न दिखाओ, ताने न मारो और जरूरत हो तो उन्हें भी मदद करो–यही सच्ची भक्ति का व्यवहार है।

उदाहरण 2. प्रश्न: कबीर की रचनाओं के प्रामाणिक संकलन-स्थलों को परंपरा के अनुसार लिखो, और यह भी बताओ कि कबीर का ज्ञान किस तरह विकसित माना जाता है।

› कबीर के ज्ञान-विकास के स्रोत पहचानो: सत्संग, पर्याटन/पर्यटन, अनुभव
› कबीर की परंपरा बताओ: भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा
› संकलन-स्थल लिखो: कबीर ग्रंथावली (मुख्यतः), बीजक (कबीर पंथ में प्रामाणिक)
› साथ में जोड़ो: कुछ रचनाएँ गुरु ग्रंथ साहब में भी संकलित

उत्तर – कबीर का ज्ञान सत्संग, पर्यटन/पर्याटन और अनुभव से विकसित माना जाता है। उनकी रचनाएँ मुख्यतः कबीर ग्रंथावली में संगृहीत हैं; कबीर पंथ में उनका संग्रह बीजक को प्रामाणिक माना जाता है; और कुछ रचनाएँ गुरु ग्रंथ साहब में भी संकलित मिलती हैं।

उदाहरण 3. कबीर की पंक्ति "ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे वैफलास में।" का सही भाव लिखिए और बताइए कि यह पंक्ति पाखंड/भेदभाव विरोध में कैसे काम करती है।

› पंक्ति को दो हिस्सों में समझो: जगहों (देवल/मसजिद/काबा) को 'मैं' से जोड़ने से इंकार
› स्पष्ट करो कि कबीर ईश्वर को किसी एक बाहरी स्थान का 'हक' नहीं मानते
› बताओ कि जब कोई धार्मिक जगह/विधि को आधार बनाकर इंसानों में दूरी बनाता है, वही भेदभाव पनपता है
› निष्कर्ष लिखो कि कबीर का जोर बाहरी ढांचे पर नहीं, भीतर की सच्चाई पर है

उत्तर – इस पंक्ति का भाव है कि कबीर ईश्वर को किसी खास धार्मिक जगह या बाहरी पहचान से नहीं बाँधते। वे कहते हैं कि मैं मंदिर-मस्जिद/काबा जैसी जगहों के आधार पर खुद को 'श्रेष्ठ/अधिकार वाला' नहीं मानता। इसी से कबीर पाखंड और भेदभाव विरोध करते हैं, क्योंकि जब लोग जगह-विधि के नाम पर इंसानों में ऊँच-नीच बनाते हैं, तब ईश्वर की सच्ची खोज दब जाती है।

उदाहरण 4. किसी साखी/शब्द को पढ़ते समय बताइए कि उसमें मुख्य उद्देश्य कौन सा भाव दिखता है–(प्रेम, ज्ञान, वैराग्य, आत्मबोध) और वह "अंदर की साधना" से कैसे जुड़ता है।

› पहचानो: कविता में लेखक किस बात के लिए इंसान को रोक रहा है–मोह/दिखावा/अज्ञान?
› देखो: क्या भाव "ईश्वर के प्रति लगाव" की तरफ है? (प्रेम)
› अगर कविता तर्क/विवेक जगा रही है तो वह "ज्ञान" है
› अगर वह मोह, दिखावा या कर्मकांड की जाल से हटने को कहती है तो "वैराग्य" है
› अगर वह सबसे पहले इंसान के भीतर की जाँच/झाँक की बात कर रही है तो "आत्मबोध" है
› अब जोड़ो: आत्मबोध के जरिए अंदर की साधना बनती है; उसी से जगतबोध यानी दुनिया देखने की सही दृष्टि आती है

उत्तर – भाव इस तरह मिलते हैं–दिखावे/मोह से हटने पर वैराग्य; विवेक/समझ बढ़ने पर ज्ञान; ईश्वर के प्रति तड़प पर प्रेम; और भीतर की जाँच/झाँक पर आत्मबोध। आत्मबोध ही अंदर की साधना से जोड़ता है, और उसी से जगतबोध की दृष्टि बनती है।

उदाहरण 5. साखी की पंक्तियाँ हैं–"प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ" और "प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ।" इन दो पंक्तियों के आधार पर समझाइए कि प्रेम जीवन में किस तरह बदलाव लाता है?

› पहली पंक्ति का भाव पकड़ो: प्रेमी न मिलने से मन की बेचैनी/तलाश दिखती है–प्रेम खाली शौक नहीं, भीतर की जरूरत है।

› दूसरी पंक्ति का भाव पकड़ो: जब सच्चा प्रेमी मिल जाता है, तब विष भी अमृत जैसा लगने लगता है।

› निष्कर्ष निकालो: प्रेम मन की दृष्टि बदलता है–दुख/कठिनाई के अनुभव को मन भीतर से सहने योग्य और मीठा बना देता है।

उत्तर – इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि प्रेम केवल चाहत नहीं, भीतर की जरूरत है। प्रेमी न मिलने पर मन बेचैन रहता है, और प्रेमी मिलने पर मन की दृष्टि बदल जाती है–कठिन/कड़वा अनुभव भी अमृत जैसा लगने लगता है। यानी प्रेम जीवन को भीतर से बदल देता है।

उदाहरण 6. कबीर की पंक्तियाँ "ना मैं देवल…", "ना तो कौने क्रिया-कर्म…", और "सब स्वाँसों की स्वाँस में" के आधार पर बताइए: ईश्वर को खोजने का सही अर्थ क्या है? केवल दो-तीन वाक्यों में तर्क सहित लिखो।

› बाहरी जगहों/क्रिया-कर्म का नकार देखें: देवल-मसजिद-काबा और क्रिया-योग-बैराग में ईश्वर 'सीमित' नहीं।

› कबीर का 'पास में' संकेत लें: ईश्वर भीतर की अनुभूति से जुड़ा है।

› 'तुरतै' और 'पल भर की तलाश' से निष्कर्ष निकालें: सच की खोज में अनुभव जल्दी जागता है।

› 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' से स्पष्ट करें कि जीवन-शक्ति/चेतना का अनुभव भीतर होता है।

उत्तर – ईश्वर को बाहर की जगहों या केवल बाहरी कर्म-कांड/योग-बैराग में ढूँढ़ना पर्याप्त नहीं है। कबीर के अनुसार ईश्वर "तेरे पास में" है–सचेत मन की भीतर की अनुभूति में। इसलिए सही खोज वह है जो "पल भर की तलाश" में जागे और "सब स्वाँसों की स्वाँस" यानी हर सांस के भीतर की चेतना/जीवन-शक्ति में ईश्वर का अनुभव कराए।

उदाहरण 7. कबीर के दोहे "भ्रम की टाटी सबै उड़ाँनी, माया रहै न बाँधी" को ज्ञान-प्रेम के संबंध के साथ समझाइए।

› पहले समझो 'टाटी' = पतला परदा/भ्रम की दीवार

› दूसरा, 'सब उड़ाँनी' = ज्ञान का तेज़ असर–भ्रम का परदा हटना

› तीसरा, 'माया रहै न बाँधी' = माया की पकड़/बंधनों का ढीला पड़ना

› चौथा, जब भीतर की पकड़ ढीली होती है, तभी मोह-दुविधा घटती है और प्रेम का 'उदित' भाव निकलता है

उत्तर – इस पंक्ति का भाव है कि ज्ञान आते ही भ्रम का परदा टूटकर उड़ जाता है और माया की पकड़ बनकर नहीं रहती; यानी भीतर की जंजीर ढीली होती है–इसी बदलाव के बाद प्रेम/उदित भाव का रास्ता खुलता है।

उदाहरण 8. प्रश्न-अभ्यास 14 के आधार पर संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्भाव संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए। (उत्तर पाठ-आधारित होना चाहिए।)

› शुरुआत में कबीर की सद्भाव-सोच का सार लिखो: कबीर बाहरी दिखावे/सांप्रदायिक जकड़ से नहीं, भीतर की सच्चाई और प्रेम-ज्ञान से मनुष्य को परखते हैं।

› 'ज्ञान की आँधी' वाले भाव को समर्थन बनाकर लिखो कि ज्ञान आते ही भ्रम-मोह टूटते हैं और कपट घटता है–यानी विभाजन पैदा करने वाली प्रवृत्तियाँ कम होती हैं।

› पद से प्रेम के 'भींनापन' का उदाहरण जोड़ो: "आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।" समझाओ कि आँधी के बाद प्रेम का भाव जागता है, जो सद्भाव बढ़ाता है।

› सहजता/सरल मार्ग का समर्थन जोड़ो: "हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।"–यह संकेत देता है कि दिखावे की नहीं, सहज सरलता की जरूरत है, जिससे संकीर्णता टूटती है।

› अंत में निष्कर्ष लिखो: इसलिए कबीर की धार्मिक-सांप्रदायिक सद्भाव की सोच ज्ञान और प्रेम से भीतर परिवर्तन पर आधारित है, जो मनुष्य को जोड़ता है।

उत्तर – कबीर के संकलित साखियों और पदों से स्पष्ट होता है कि उनका धार्मिक और सांप्रदायिक सद्भाव 'बाहर के भेदभाव'

से नहीं, 'भीतर के बदलाव' से जुड़ा है। कबीर बताते हैं कि जब ज्ञान की आँधी आती है, तो भ्रम की टाटी उड़ जाती है, मोह-दुविधा की गाँठें टूटती हैं और कपट घटता है–यानी जो चीजें लोगों को बाँटती हैं, वे कमजोर पड़ती हैं। उसी ज्ञान के प्रभाव से प्रेम का भाव जागता है; पद में यह भाव सीधे आता है–"आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।" इससे समझ आता है कि आँधी के बाद भक्त का जीवन प्रेम से भींनाया हुआ हो जाता है और यही सद्भाव की जमीन बनती है। कबीर सहजता पर जोर देकर दिखावे से दूरी भी बताते हैं, जैसे–"हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।" इस तरह कबीर की सोच बताती है कि सच्चा धर्म-भाव ज्ञान और प्रेम के भीतर उतरने पर ही टिकता है, तभी संकीर्णताएँ टूटती हैं और मनुष्य के बीच सामंजस्य बढ़ता है।

उदाहरण 9. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए: पखापखी, अनत, जोग, जुगति, बैराग, निरपख

› दिए गए प्रत्येक शब्द को ध्यान से पढ़ो और उन्हें सूची में अलग-अलग लो।
› तत्सम रूप में वही मूल अर्थ/ध्वनि-रचना मानक संस्कृत-रूप में बदलकर लिखो।
› 'अनत' में 'न्त' जोड़कर 'अनन्त' लिखते हैं।
› 'जोग' को 'योग' और 'जुगति' को 'युक्ति' के रूप में पहचानते हैं।
› 'बैराग' का तत्सम रूप 'वैराग्य' और 'निरपख' का तत्सम रूप 'निरपेक्ष' लिखते हैं।
› अंत में वर्तनी दोबारा जाँच लो–यही अंक दिलाता है।

उत्तर – पखापखी पक्ष-पक्षी (तत्सम/मानक रूप), अनत अनन्त, जोग योग, जुगति युक्ति, बैराग वैराग्य, निरपख निरपेक्ष

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- आचरण वाले गुण लिखो: परदुःख, विनम्रता, निंदा न करना, निश्छलता, सत्य, समदृष्टि।
- बोर्ड में संकलन-स्थल (कबीर ग्रंथावली, बीजक, गुरु ग्रंथ साहब) लिखने वाले प्रश्न आते हैं–नाम क्रम से याद करो।
- पाखंड+भेदभाव शब्द लिखकर, 2-3 पंक्तियाँ (देवल/मसजिद/काबा; स्वाँसों की स्वाँस में) जोड़कर उत्तर लिखो।
- उत्तर में 4 भाव लिखो: प्रेम, ज्ञान, वैराग्य, आत्मबोध–और जोड़ो कि आत्मबोध से जगतबोध बनता है।
- हर साखी में एक पंक्ति से भाव और दूसरी से प्रभाव लिखो–दो लाइन का उत्तर सबसे आसान रहता है।
- पंक्तियों के आधार पर 'बाह्य-खोज व्यर्थ' और 'आंतरिक ईश्वर' का भाव लिखो।
- अक्सर प्रश्न 'रूपक का अर्थ' पूछते हैं–हर पंक्ति में आँधी/टाटी/मोह/प्रेम का संबंध लिखो।
- "रचना और अभिव्यक्ति" में प्रत्येक मुख्य बिंदु के साथ एक उद्धरण/भाव लिखना सुनिश्चित करो।
- तत्सम में अक्षर/मात्रा सही लिखो–वर्तनी की छोटी गलती भी अंक काट सकती है।

एक नज़र में रिवीज़न

› - परदुःख, उपकार, अभिमान-निंदा से दूरी, निश्छल वाणी, सत्य, समदृष्टि, तृष्णा-त्याग।
› - निर्गुण संत, ज्ञान: सत्संग+पर्यटन+अनुभव; संकलन: ग्रंथावली/बीजक/गुरु ग्रंथ साहब
› - जगह नहीं, भीतर; पाखंड नहीं, सच्चाई; भेदभाव नहीं, प्रेम।
› - प्रेम-ज्ञान-वैराग्य-आत्मबोध अंदर की साधना, जगतबोध
› - प्रेम: विष अमृत, संत: निरपख हरि, ज्ञान: विवेक मुक्ति
› पास में, बाहर में नहीं; तुरतै मिलिहौं; स्वाँस में भीतर
› ज्ञान=आँधी; भ्रम-माया-मोह टूटा; प्रेम-उदित जागा।
› - हर बिंदु: विचार + पाठ-पंक्ति/भाव समर्थन
› - अनतअनन्त, जोगयोग, जुगतियुक्ति, बैरागवैराग्य, निरपखनिरपेक्ष